श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर

देलवाड़ा के मंदिर अधिक प्रसिद्ध नही है, जबकि आबू पर्वत के देलवाड़ा के जैन मंदिर विश्व प्रसिद्ध है इसका मूल कारण यह है कि वह पहाड़ी स्थल, भ्रमणीय स्थल है। अग्रेंजी शासन में शीतकालीन अवकाश के समय यहां अधिक दर्शनीय स्थल बन जाता था। प्रत्येक अंग्रेज व्यक्ति यहां भ्रमण करता। भारत स्वतन्त्र होने के बाद क्षेत्र के प्रथम प्रधानमंत्री ने इसका अवलोकन किया है। जो वास्तुकला वहां पर है, उसी अनुरूप शिल्पकला यहां भी उपलब्ध है।

इन मंदिरों में जैन संस्कृति एवं कला के अतिरिक्त उस युग की हिन्दू संस्कृति को दर्शाया गया है। पृथक–पृथक भाव में देवी देवता नृत्य करती हुई अफ्सराएं, पशु–पक्षी, फूल–पत्ती इत्यादि पत्थरों पर उत्कीर्ण कर रखा हैं।

मंदिर में प्रवेश करते समय सर्व प्रथम मंदिर में प्रवेश करते है। छोटे–छोटे गुम्बजों, विभिन्न कलाओं का प्रदर्शन किया है। प्रस्तुत चित्र में 7 देवियां विभिन्न मुद्रा में दिखाई देती है। खुला मण्डप में जाते हैं, गोलाकार गुम्बज के बीचों बीच में एक झूमका है जो अलंकृत रूप से बना हुआ है। स्तम्भ पर उत्कीर्ण 16 विद्या देवियों की प्रतिमा उत्कीर्ण है, जो विभिन्न मुद्राऐं लिए हुए है। विशेष रूप से

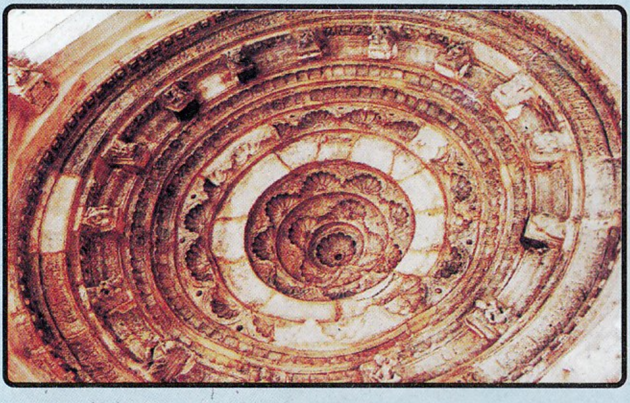

श्रृंगार की मुद्रा में है। कोई दर्पण देख रही है, नुपूर बाँध रही हैं, वाद्य–वीणा बजा रही है, मुद्राओं में है। यहॉ पर नृत्य, संगीत, वाद्य–यंत्र का उपयोग कर भगवान का उत्सव सा दृश्य अंकित है।

इस सभा मण्डप के ऊपर जाते है, जो श्रृंगार चौकी (नौ चौकी) कहलाती है। जहां पर भी 9 गुम्बजाकार उत्कीर्ण है। प्रत्येक गुम्बज में विभिन्न प्रकार की कला से दर्शाया गया है। दरवाजे से नव चौकी तक 36 स्तम्भ हैं जिसमें 20 कलात्मक है। और कुल 149 स्तम्भ है।

परिक्रमा की ओर चलते हैं, शिखर की ओर देखे तो वहां की विभिन्न आकर्षण मूर्तिकला उत्कीर्ण है, यहां देवियां हाथी पर बैठी हुई, देवी हंस मयूर तथा भगवान की प्रतिमा भी उत्कीर्ण है। इनकी छाया प्रति का अवलोकन करने पर हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और कलाकार ने अपनी भावना को इन निर्जीव में इस प्रकार ढाला है जिसमें

वे सजीव प्रतीत हो सके।

यह मंदिर को बावन जिनालय के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक जिनालय में तीर्थंकर भगवान, गुरूमूर्ति प्रतिष्ठित है और इन प्रतिमाओं पर उपलब्ध पठनीय उत्कीर्ण लेखों को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है जो इस प्रकार है। लेखों में अंकित **अंकों को अंग्रेजी भाषा में** दर्शाया है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैः–

1. श्री ऋषभदेव भगवान (मूलनायक) की श्वेत पाषाण की 39'' व परिकर तक 59'' ऊंची प्रतिमा है।

इसके नीचे यह लेख हैः–

।। 90।। स्वस्ति सं. 1469 वर्षे माघ शुदि 6 रवौ श्रीमाल वंशे नावरगौत्र ठ. अहड् संताने श्री पुत्र मंत्रि करमसि श्रेयोर्थ लघुभ्रातृ व देपालेन भ्रातृष्य ठ भोजराज ठ नयणसिंह भार्या माल्हदे सहितेन श्री आदिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठित श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्रसूरिभिः देवकुलपाटकैः

2. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के दाएं) की खड़ी श्वेत पाषाण की (परिकर सहित) 31'' ऊंची है। इस पर पांच नाग का छत्र है। इस पर यह लेख है।

"।। 90।। सं. 1475 वर्ष ज्येष्ठ सुदि 7 गुरूवारे श्रीमाल जातीय मंत्रि– णूंप्रासुत नंदिगेस 1 सुत पुत्र सा. आसा सु श्रावकेण श्री पार्श्वनाथ बिंब स्वपुन्यार्थे कारित श्रीखरतरगच्छे श्री जिन वर्द्धन सूरिभिः प्रतिष्ठित"

3. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के बाएं) की खड़ी श्वेत पाषाण की परिकर सहित 31'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर 7 नाग का छत्र है। इस पर कोई लेख नहीं है।

जिन मंदिर से बाहर निकलते समय दाईं ओर खेला मण्डप (सभा मण्डप) में एक कारनिस पर निम्न प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं।

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की (फण सहित) 21'' ऊंची है। श्याम पाषाण का पंच तीथी परिकर बना है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2. श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' ऊंची प्रतिमा है। लांछन स्पष्ट है, कोई लेख नहीं है।

3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लांछन व लेख नहीं है।

4. श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लांछन व लेख नहीं है।

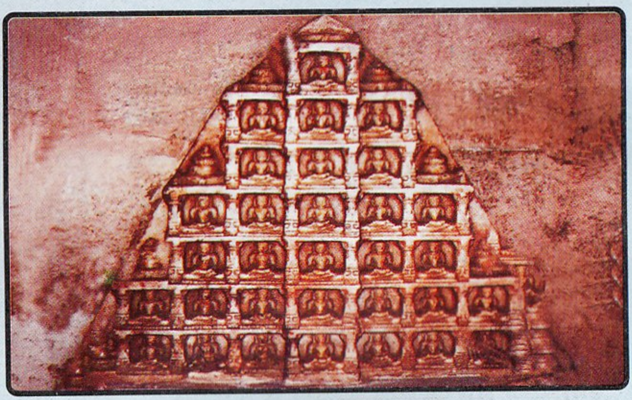

5. श्री शान्तिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 21'' ऊंची प्रतिमा है इस पर लेख है – ऊँ झूंला

6. श्री जिनेश्वर भगवान का पट्ट श्वेत पाषाण का पर्वतनुमा 25X25''के आकर का है। इसमें 31 जिन प्रतिमाएं है। इस पर कोई लेख नहीं है।

7. श्री नन्दीश्वर द्वीप का पट्ट श्वेत पाषाण का 25'' गोलाकर है। इस पर लेख जो पढ़ने में आता हैः– सं. 1494 वै. 11 गुरू दिनं श्री जिन सागर सूरिभिः

जिन मंदिर के बाहर निकलते समय बाईं ओर कारनिस परः–

1. श्री धर्मनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19' परिकर सहित 31' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2. श्री श्रेयांसनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 28'' ऊंची प्रतिमा है। लांछण गेण्डा प्रतीत होता है, लेख नहीं है।

3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लांछन व लेख नहीं है।

4. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लांछन व लेख नहीं है।

5. श्री चतुर्विशन्ति तीर्थी श्वेत पाषाण का पट्ट 27'' ऊंचा व 21'' चौडा है।इसके नीचे अस्पष्ट, घीसा हुआ, अपठनीय लेख है। कुछ सीमेन्ट में दबा है।

6. श्री चरण–पादुका श्याम पाषाण के 5'' के आलिए में स्थापित है। यह भी श्याम पाषाण की है। इस पर कल्प वृक्ष है। पादुका के एक ओर श्याम सर्प व दूसरी ओर मयूर है, यह इस बात का प्रतीक है कि (धर्म) ईश्वर के आश्रय से एक दूसरे के विरोधी होतो हुए भी एक ही स्थान पर है। इस पर यह लेख है–

संवत् 1491 वर्षे माध वदि 5 दिने बुधे उकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव भार्या मेलादे तत्पुत्र साधु श्री राहणपाले भार्या नारिगंदे पुत्र रणमल्लादि सहितेन देवकुलपाटके पूर्वाचलगिरौ श्री शत्रुंज्जाब–तारे मोरनागकुरिका सहिता प्रति श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धनसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरि तत्पट्टे श्री जिनसागर सूरिभि। **मुनि शील विजय जी ने सं. 1746 में उन द्वारा रचित अनावेली तीर्थमाला में यह प्रमाण दिये है कि देलवाड़ा ग्राम में बहुत मंदिर थे। उन्होनें लिखा है:–**

"देलवाडि कि देवल घणां बहु जिन मंदिर रणीयामजां

होई डूंगर तिहां से थाप्या यार श्री शत्रुंजे नि गिरनार" (37)

इस उल्लेख से स्पष्ट होता है कि देलवाड़ा में पहले शत्रुंजय के, गिरनार पर्वत की स्थापना होने का सिद्ध होता है। इस आधार पर पर्वत पर स्थित मंदिर शत्रुंजय पर्वत रहा होगा। इस नाम से नाड़लई ग्राम में पर्वत विद्यमान है, देलवाड़ा में नहीं है और न ही इसकी प्रसिद्धि है। एक अनुमान के आधार पर ही इसको शत्रुंजय पर्वत कह सकते है, शोध का विषय है।

खेलामण्डप (सभामण्डप) से बाहर निकलते शहर बाहरी सभा मण्डप (श्रृंगार चौकी) में कोई प्रतिमा नहीं है।

इस मंदिर को बावन जिनालय के नाम से जाना जाता है। मंदिर में प्रवेश करते समय बाई ओर देवकुलिकाएं में:–,

1. देव–देवी का पट्ट श्वेत पाषाण का 25''x23''x13'' का है। इस पर 6 प्रतिमाएं एक पुरूष, पांच महिला हाथ जोड़े खड़ी है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2. श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' व परिकर सहित 17'' ऊंची प्रतिमा है। इसके नीचे अस्पष्ट लेख है।

3. श्री शान्तिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4. श्री मल्लिनाथ भगवान की पीत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर दोनों ओर अस्पष्ट अपठनीय लेख है।

5. श्री जिनेश्वर भगवान की पीत पाषाण की 25'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लोछण स्पष्ट नहीं है। दोनों ओर अस्पष्ट लेख है।

6. श्री पद्मप्रभ (या शीतलनाथ) भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। अस्पष्ट घिसा हुआ लेख है।

7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 23'' व परिकर सहित 39'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

8. श्वेत पाषाण का चित्र पट्ट 25''x 25'' के आकार का है। इसके ऊपर प्रतिमा –मंदिर बना है। बाईं ओर वृक्ष है उस पर पक्षी बैठा है, नीचे शिकारी धनुष–बाण लिए है, नीचे एक पक्षी मृत है। इसके पास ही पांच साधु है–

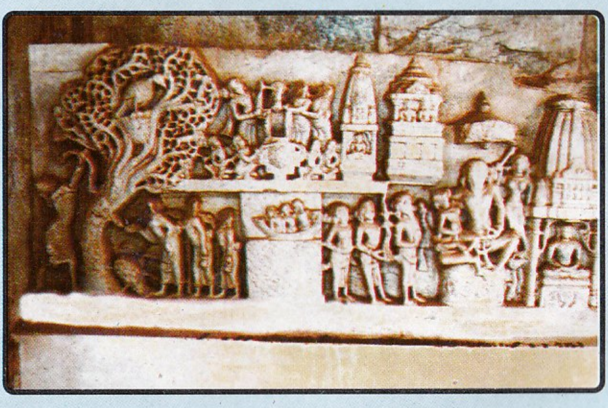

इसके नीच यह लेख है:–

संवत् 1491 वर्षे वैशाख वदि श्री रामदेव भार्या मेला दे पुत्र सहणपाल–शम्भराज

–बड़ी देवरी में बाई ओर से

9. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' प परिकर सहित 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख है:– संवत् 1495 वर्षे ज्येष्ठ शुदि 14 बुधे रामदेव भार्या मेलादे पुत्र सहणपाल भार्या–

10. श्री आदिनाथ भगवान (मध्यम) की श्वेत पाषाण की 37'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख है:–

संवत् 1495 वर्षे ज्येष्ट शुदि 14 बुधे नवलखा–भार्या, सहणपालेन भार्या नारिंगदे श्री आदिनाथ बिंब खरतरगच्छे –

11. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' व परिकर सहित 21'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर जो लेख पढने में आता है वह यह है:– संवत् 1495 ज्येष्ठ सुदि 14 बुधे

देवरी के बाहर

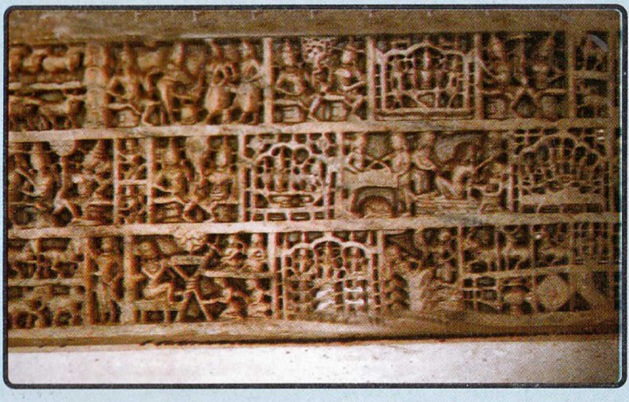

12. चित्र पट्ट श्वेत पाषाण का 51''X 24'' का है। यह पट्ट विभिन्न कलाकृति जिसमें स्थापना जी पर प्रतिमा, देव–देवी प्रतिमा, आदि का बना है, कोई लेख नहीं है।

13. श्री चतुर्विंशति तीर्थ प्रतिमा पट्ट श्वेत पाषाण का 31''X19'' का हैं। इस पर लेख है:–

।। 90।। संवत् 1473 वर्षे माघ सुदि...... गुरूवार सा. अंबा पुत्र सा. वीराकेन स्वभातृ अ श्राविका स्व पुण्यार्थ चतुर्विंशति पट्टक: कारित: श्री खरतरगच्छे प्रतिष्ठितं श्री जिनवर्द्धन सूरिभि:।

14. श्री जिनराज सूरि (जैनाचार्य) जिन राज सूरि की श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः–

संवत् 1469 वर्षे माद्य शुदि 6 दिने उकेश वंशे सा. सोपा संताने सुहढ़ा पुत्रेण सा. नान्हाकेन पुत्र वीरमादि परिवारयुतेन श्री जिनराजसूरि मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठता श्री खरतरगच्छ श्री जिनवर्द्धनसूरिभिः''

15. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।

16 श्री भेरूनन्द उपाध्याय (जैन मुनि) की श्वेत पाषाण की 17''ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः– "संवत् 1469 वर्षे सा. रामदेव भार्या मेलादे श्राविकया स्वभ्रातृ स्नेहलया श्री जिन देवसूरि शिष्याणां श्री भेरूनन्दनोपाध्यायाना मूर्तिः कारिता प्रतिष्ठता श्री जिनवर्द्धन सूरिभिः''।

17. बीस विरहमान पट्ट श्वेत पाषाण का 29''X 21'' पर्वतनुमा है। इस पर लेख हैः– "संवत् 1491 माध सूदि 5 बुधवारे उकेश वंशे नवलखा गोत्रे श्री रामदेव भार्या मेलादे तत्पुत्र सा. श्री सहणपाल भार्या नारिंग दे पौत्रादि–

18. श्री मोक्ष पूर्णाहुति चित्र पट्ट श्वेत पाषाण का 61'' ऊंचा है। चित्र को देखकर स्पष्ट होता है इसमें तीन पट्टो का मिश्रण है। इसके ऊपर 108 प्रतिमाएं बाईं ओर 34 प्रतिमाएं 6 देवी बीच में 72 प्रतिमा दाई ओर 20+20 प्रतिमाएं है। इसके नीचे यह तीन लेख हैः–

1. **श्री जिनराज सूरि** खरतरगच्छ के आचार्य थे इन्होंने संवत् 1432 में पाटण में आचार्य की पदवी प्राप्त की। इन्होंने चित्तोड़ में श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई और इनका काल संवत् 1461 में देलवाड़ा में हुआ।

2. **श्री भेरूनन्द उपाध्यायः**– ये जिनदेवसूरि के शिष्य थे इन्होंने 14 वी शताब्दी में श्री अजित शांति स्तवन की रचना की।

1. संवत् 1491 वर्षे माध 5 बुधवारे उकेश वंशे नवलखा गोत्रे साधु श्री रामदेव भार्या श्राविका मेलादे पुत्र साधु श्री सहणपाल भार्या नारिंग दे श्राविकया–रणधीर रणवीर रणभ्रम जी– पालशि पौत्रादि सहित मोक्ष पूर्णाहुति पट्टः–सूरि पट्टे श्री जिन वर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि।

2. सं. 1495 ज्येष्ठ सुदि 4 गुरूवारे–आगे अस्पष्ट

3. सं. 1496 वदि 5 सा. रामदेव भार्या मेलादे आगे अस्पष्ट है।

19. श्री सम्भवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23" ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।

बड़ी देवरी में–चतुर्मुखी व अन्य प्रतिमाएं।

20 श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 37" ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं हैः– (चतुर्मुखी नं. 1)

21. श्री अजितनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 31" ऊंची प्रतिमा है। (चतुर्मुखी नं. 2) इस पर लेख हैः– बिंब कारापिंत सा. सहदेताबक श्रेयसे–

22. श्री जिनेश्वर भगवान की पीत पाषाण की 27" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है, लांछन व लेख अस्पष्ट, अपठनीय है।(चतुर्मुखी नं. 3)

23. श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 27" ऊंची प्राचीन प्रतिमा है, इस पर कोई लेख नहीं है।

इसी देवरी में प्रवेश करते समय बाईं ओर एक आलिए में–

24. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 35" ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

संवत् 1495 वर्षे ज्येष्ठ सुदि 14 बुधवासरे सा. श्री चन्द्रप्रभ बिम्ब कारित प्रतिष्ठित श्री जिनसागर सूरभिः

25–26. श्री जिनेश्वर भगवान (चन्द्रप्रभ भगवान के दोनों ओर) की (परिकर सहित) खड़ी प्रतिमा 17" ऊंची है। इन पर (दोनों पर) एक ही तरह का लेख पढ़ने में आता है। संवत् 1495 जेष्ठ सूदि 14 बुधे उकेश वंशे कूकडा गोत्रे सां उला भार्या साहू पुत्र सा.–भार्या–जिन कारिपितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे–

27. श्री जिनेश्वर भगवान की (अजितनाथ भगवान के पीछे की ओर एक आलिए में) श्वेत पाषाण की 27'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख अस्पष्ट है।

28–29. श्री अजितनाथ भगवान (श्री जिनेश्वर भगवान के दांए व बाएं) की श्वेत पाषाण की 19'' व नीचे तक 25'' तक ऊंची प्रतिमा है। इनके नीचे लेख हैः–

सं. 1491 वर्षे ज्येष्ठ सुदि 14 दिने बुधवारे उकेश वंशे कूकड़ा गोत्रे उल्हा भार्या साहू पुत्र सहणपति भार्या भाणू पुत्र आत्म पुन्यार्थ सहिते श्री अजितनाथ कारितं श्री जिनसागरसूरिभिः

बड़ी देवरी में प्रवेश के समय दाएं (एक आलिए में)

30. श्री नेमिनाथ भगवान (मध्य) की श्याम पाषाण की 35'8 ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः–

संवत् 1486 वर्षे ज्येष्ठ वदि 5 शुक्र सा. सहणाकेन श्री नेमिनाथ बिंब कारिंत प्र जिनवर्द्धनसूरि पट्टे श्री जिन चंद्र सूरि।

31–32. श्री आदिनाथ भगवान (श्री नेमिनाथ भगवान के दोनों ओर) की श्वेत पाषाण की 23'' (परिकर सहित) ऊंची प्रतिमा है। इस पर यह लेख हैः–

सं. 1495 वर्षे फागुण वदि 9 उकेश वंशे कूकड़ा गोत्रे श्री आदिनाथ–परिकर सहिते कारिंत प्र.

33. श्री सिद्धचक्र यत्र गोलाकार श्वेत पाषाण का है। यंत्र पर मंत्र लिखे हुए है।

34. श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर पीछे की ओर लेख अपठनीय है।

35. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख व लांछण नहीं है।

36. श्री धर्मनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।

37. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लाछण व लेख नहीं है।

38. श्री पार्श्वनाथ भगवान का पीत पाषाण की 13'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

39. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः– श्री चन्द्रप्रभ सा. सहणा

बडी देवरी (मंदिर) के बाहरः–

40. श्री वासुपूज्य चतुर्विशंति बीसविरहमान पट्ट व जिन बिंब मूर्ति व अन्य चित्र पट्ट श्वेत पाषाण का 65″ ऊँचा है। इस पर तीन लेख है–

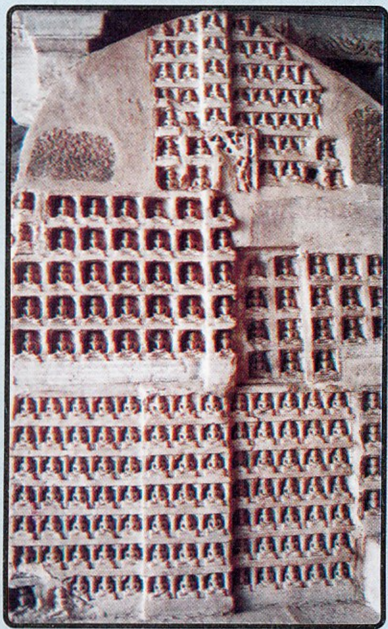

1. संवत् 1469 वर्षे माघ शुदि 6 खो उकेश वंशे श्रृंगारों भुवनपाल हल्यु सु भुवन पाल यत् य. स्वनाम नित्यं यथार्वत–तदन्वये ततो ज्ञात–तत्व मृ धु प्रतापी ननु रोब तापी जिनाधिारको गुरूपादलक्षो। गुणानुरागी हृदयविरागी युगलक तस्यागना–गकुरम नेत्र सीतेन धार सहितेन स्व. सहणा–शुश्रावकेंया जिन मातृ पुन्यार्थ श्री वासुपूज्य बिंब चतुर्विशंति पट्ट विशंति विरहमानादि

2. संवत् 1469 वर्षे माघ शुदि 5 नवलक्षा गोत्रे सा. रामदेव भार्या मेलादे पुत्र सहणपाल भार्या नारिंग देव्या श्री जिनमुर्ति बिंबानि प्रतिष्ठित श्री खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्रसूरी पट्टे श्री जिन सागरसूरिभिः।

3. संवत् 1491 वर्षे का लेख पट्ट के नीचे की ओर जमीन से लगा है, दबा है, अपठनीय है।

बड़ी देवरी मेंः–

41. श्री अजितनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 43″ ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः– संवत् 1481 वर्षे वदि 12 श्री जिनवर्द्धनसूरि

प्रवेश के समय दाईं ओर आलिए मेंः–

42. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 35″ऊँची प्रतिमा है। इस पर अपठनीय लेख हैः–

प्रवेश के समय बाई ओर आलिए में–

43. श्री शीतलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 33'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :– श्री शीतलनाथ"

देवरी के बाहर गुम्बज की कला:– गुम्बज के बीच झुमका लटक रहा है। खुदाई स्पष्ट व कलात्मक है जो सराहनीय व प्रशसनीय है।

देवरी से बाहर निकलते समय बाई ओर:–

44. श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा एक आलिए में (कल्पवृक्ष के स्तम्भ पर) विराजित है। इसके नीचे यह लेख है:–

"श्री आदिनाथ बिंब कारिंत" कल्पवृक्ष के आकार का स्तम्भ है, उसके बीच में उक्त प्रतिमा विराजित है।

45. श्री देव–देवी पट्ट (6 समूह का) श्वेत पाषाण का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

46. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:–

संवत् 1495 वर्षे ज्येष्ठ सूदि 14 बुधे श्री आदिनाथ बिंब कारिंत – जिन सागर सूरिभिः

47. श्री जिनेश्वर भगवान की पीत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लाछण व लेख नहीं है:–

48. श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट अपठनीय लेख है।

49. श्री सुमतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :-

''श्री सुमतिनाथ''

50. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची खण्डित प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

51. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है।

52. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लांछण अस्पष्ट है।

लेख संवत् 1492 का है।

53. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लांछण व लेख नहीं है।

54. श्री महावीर भगवान की पीत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। केवल महावीर बिंब पढ़ने में आता है।

55. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। परिकर भी बना है। इस पर लेख है:-

संवत् 1495 वर्षे ज्येष्ठ सूदि 14 नवलखा साधु श्री रामदेव भार्या मेलादे पुत्र सहणपाल भार्या नारिंग दे श्री पार्श्व बिंब कारापिंत श्री खरतरगच्छे :-

बड़ी देवरी में

56. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 39'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:-

संवत् 1486 वर्षे ज्येष्ठ वदि 5 उकेश वंशे नवलक्षे गोत्रे श्री रामदेव भार्या मेलादे पुत्र सहणपाल भार्या नारिंग दे श्री आदिनाथ बिंब-

57. श्री विमलनाथ भगवान (आदिनाथ भगवान के दाई ओर) श्वेत पाषाण की 9'' व परिकर 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:–

सं. 1495 ज्येष्ठ सुदि 14 बुधे श्री विमलनाथ बिंब कारिंत मानसिरी श्रावकिया प्र. जिन सागर सूरिभि श्रीमाल ज्ञातीय माझियां गोत्रे'' की 13'' ऊँची प्रतिमा है। पीछे अपठनीय लेख है।

64. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। पीछे अपठनीय लेख है।

65. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लांछण व लेख अस्पष्ट है।

66. **श्री पाण्डव, द्रोपदी** का श्वेत पाषाण का पट्ट 29''X21'' का है। इस पर यह लेख है:–

सहदेव पाण्डव मूर्ति – द्रोपदी –जिनवर्द्धन सूरि

इस मंदिर में भोयरा (तहखाना) है। इसमें 13 खण्डित प्रतिमाएं व 6 परिकर के टुकडे है।

बावन जिनालय के भीतर स्थापित कई प्रतिमाएं खण्डित व इनके नेत्र नहीं है। बावन जिनालय के दरवाजे की ऊपर कई देहरियों पर द्रेवकुलिका कारापिता का लेख उत्कीर्ण है:–

जिसमें संवत् 1404, 1486, 1403,1484, 1488 के है, तथा कई देहरियों पर कारीगरों के नाम उत्कीर्ण है।

इनको लिपिबद्ध नहीं किया है क्योंकि इसकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

मंदिर के बाहर मुख्य सड़क के किनारे एक चार दीवारी बनी हुई है, उसके बीच श्री भोमिया बावजी की छतरी (देवरी) बनी हुई है। इसमें भोमियां देवजी की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर मारी–पन्ना चढ़ाये जाते है। इनकों खेजडिया बावजी भी कहा जाता है। यहाँ की यह मान्यता है कि किसी भी मानव को खांसी का रोग हो जाय और दवा से ठीक नहीं होता है तो यहां

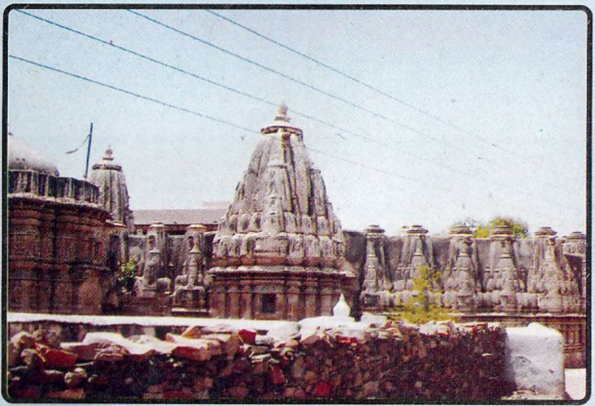

मंदिर के पीछे का आवरण

पर आकर मानता बोलते है और निर्धारित अवधि में रोग मुक्त हो जाता है।

यहां तक भी कहा जाता है कि इनके चमत्कार से ग्राम में कभी डाका नहीं पड़ा। इसके दर्शन मात्र से मनुष्य धन्य हो जाता है।

मंदिर के बाहरी भाग की कलाकृति विभिन्न स्थलों से दर्शायी गयी है। जो कलात्मक है, मन मोहक है तथा विदेश पर्यटक इन कलाओं को घण्टों निहारते रहते है।

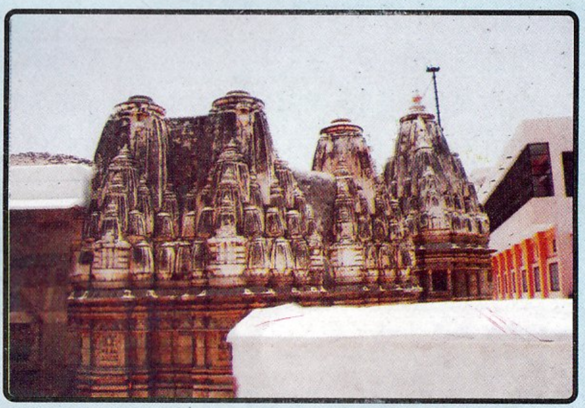

मंदिर का बाहरी भाग

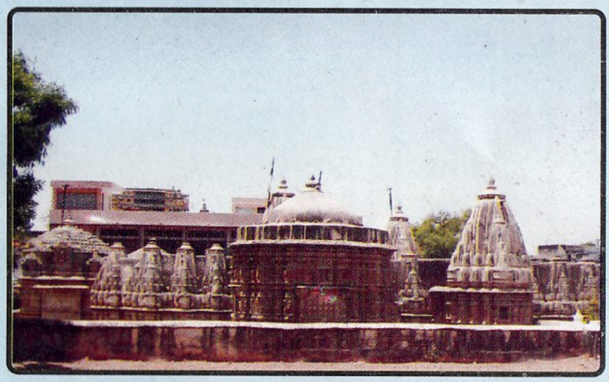

मंदिर के आगे का भाग

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर

यह विशाल शिखरबंद मंदिर है। यह मंदिर कितना प्राचीन है। यह स्पष्ट नहीं है। मंदिर में स्थापित जिन प्रतिमा स. 1300 के लगभग की है, गुरू पादुका संवत् 1165 की है जो स्थाविर रहती है। इससे यह स्पष्ट है कि मंदिर सं. 1100 के आस पास या उसके पूर्व का है। अतः 1000 वर्ष पुराना है। इसमें तहखाना व बावन देवकुलिकाएं बनी हुई है। पास में कुआ भी है, मंदिर कलात्मक है। जो प्राचीनता का द्योतक है।

मंदिर में प्रवेश करते समय प्रवेश द्वार, प्रथम खुला चोक (सभा मण्डप) बाद मे श्रृंगार चाकी (नव चौकी) है। प्रथम सभा मण्डप गुम्बजाकार है व नव चौकी नव घूमटाकार भाग में विभाजित है। इनकी कलाकृति

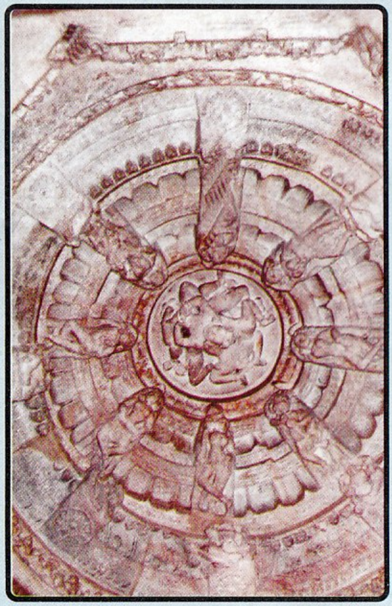

विभिन्न प्रकार की है। 1. अप्सराएं विभिन्न कलाकृति में दिखाई गई है 2. कीचक की आकृति व अन्य है।

इस मंदिर में कुल 131 स्तम्भ है। इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :-

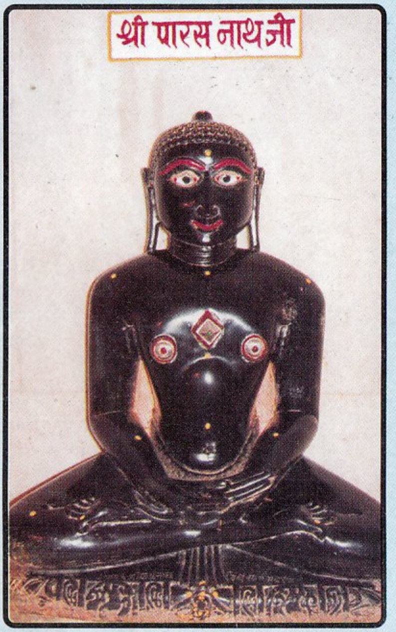

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की श्याम पाषाण की 33'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है:-

"सं. 1486 श्री पार्श्वनाथ बिंब सा. सहणा'

जिन मंदिर से बाहर निकलते समय बाई ओर कारनिस पर :-

1. श्री नेमिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इसके नीच पीछे की ओर अस्पष्ट लेख है:- केवल नेमिनाथ पढ़ने में आता है।

2. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पीछे अस्पष्ट लेख है।

3. श्री जिनेश्वर भगवान की पंच तीर्थी श्वेत पाषाण की 6'' व परिकर (नीचे तक) सहित 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 29'' व सर्प के छत्र तक 31'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है। प्रतिमा के मस्तक पर 5 नाग है। इस पर कोई लेख नहीं है।

5. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। कहा जाता है कि यह प्रतिमा खनन से प्राप्त हुई है। इसकी प्रतिष्ठा होना शेष है। इसका पीछे अस्पष्ट लेख है।

6.   श्री शत्रुंजय गिरिनावतार पट्ट श्वेत पाषाण का पर्वताकार 18'' X 16'' है। इस पर लेख हैः–

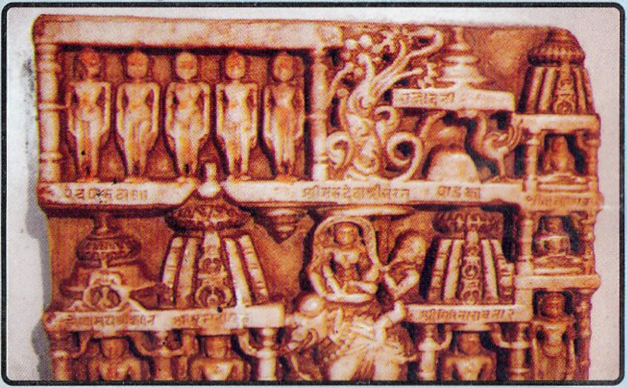

पांच पाण्डव श्री मरूदेवीमूरत मरूदेवी के लेख के ऊपर की ओर पादुका स्थापित हैं नीचे यह लेख हैः–

"सं. 1506 फा. शुदि 9 श. सा. सोमा भार्या रूडीसुत सा. रामधरेण भ्रात फाफासीधर तिहुणा गोविन्दादि कुटुंबयुतेन तीर्थ श्री शत्रुंजय श्री गिरिनारावतार पट्टिका का. प्र. श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सूरिभिः"

7.   श्री पुंडरीक स्वामी की श्वेत पाषाण की 21'' ऊची प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है।

"संवत् 1689 वर्षे आषाढ़ 4 शनौ देलवाड़ा वास्तव्य शवरगोत्रे ऊकेशज्ञातीय वृद्ध शाखीय सा. मानाकेन भा. हीरांरामा पुत्र डायरामा फयायुतेन स्वश्रेयसे श्री पुंडरीक मूर्तिः कारांपित प्रतिष्ठिंत संडेरगच्छे भ. श्री माना जी केसजी प्र."

जिन मंदिर से बाहर निकलते समय दाईं ओर कारनिस पर–

8.   श्री कुंथुनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नही है।

9.   श्री श्रेयांसनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नही है। लेकिन लांछण गेंडा (?) प्रतीत होता है।

10.   श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः– श्री आदिनाथः

श्री पुण्डरीक स्वामी :– श्री आदिनाथ भगवान के प्रथम गणधर थे तथा ये श्री ऋषभदेव के पौत्र, भरत के ज्येष्ठ पुत्र श्री ऋषभसेन ही प्रथम शिष्य बने।

11. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 31″ व छत्र (सर्प) तक 33″ ऊँची खडी प्रतिमा है। सात नाग है। इस पर कोई लेख नही है।

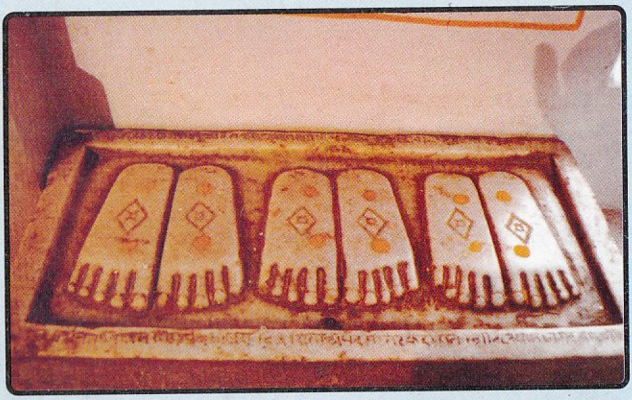

12. श्री चरण पादुका तीन जोडी श्वेत पाषाण का पट्ट का आकार 17′X 8′ का है। इसके किनारे यह लेख है।

(ऊपर) विनायक सागर पादुका तत् शिष्य हर्षसागर पादुका– शिष्य

(नीचे) सं. 1165 वर्ष वैशाख सुदि 3 शिष्य अपर सागर (?) कारापितं नलवाकेंन–

13. श्री बीस विरहमान पट्ट श्वेत पाषाण का.25″X14″ के आकार का है।

14. श्री जिन रत्न सूरि की श्वेत पाषाण की 21″ ऊंची प्रतिमा है। इस पर लेख है:–

सं.1486 – वैशाख सूदि 3

श्री जिनरत्न सूरि की गुरू मूर्ति कारिता प्रतिष्ठता श्री जिनदत्त सूरि सभा मण्डप के मध्य समवशरण बना है जिसमें–

श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 7″ ऊंची चतुर्मुखी प्रतिमा है। समवशरण स्तम्भ के चारों ओर किनारे पर लेख है जो अपठनीय है।

सभामण्डप (खेला मण्डप) से बाहर निकलते समय बाहरी सभा मण्डप (नव चौकी) में कोई प्रतिमा नहीं है।

---

1. **श्री जिनरत्नसूरि** खरतरगच्छीय आचार्य थे। इनका जन्म् रोहणा ग्राम में व स्वर्गवास आगरा में हुआ।

बावन जिनालय में– **मंदिर में प्रवेश करते समय बाई ओर देवरियों में कई देवरियां बन्द है।**

1. श्री विमलनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 31'' ऊंची प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है:– सं.1495 ज्येष्ठ सुदि 14 बुधे श्री विमलनाथ बिंब कारितं मानासिरी श्राविकथा प्र.जिन सागर सूरिभि

2. श्री वासुपूज्य भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' व परिकर सहित 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:– सं. 1491 वर्षे माध सुदि 5 बुधे उकेश वंशे नवलक्षगोत्रे सा. रामदेव भार्या मेलादे पु. सहणपाल–उध्यापने–पुन्यार्थ–श्री वासुपूज्य–खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे–

3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 11'' परिकर सहित 21'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:– सं. 1491 वर्षे माध सुदि 5 बुधे उकेश वंशे कूकडा गोत्रे जिन सागर सूरि...

4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है केवल सं. 1486 वर्ष पढ़ने में आता है। लांछण सर्प का दिखई देता है।

5. पर्वताकार पट्ट श्वेत पाषाण का 26'' ऊँचा है जिसमें 31 प्रतिमाएं बनी है। इस पर कोई लेख नहीं है।

6. श्री जिनवर्द्धनसूरि की 18'' परिकर सहित 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है:– सं. 1486 वर्षे ज्येष्ठ वदि 5 दिने नवलक्षगोस्त्रीय सा. रामदेव भार्यया श्री मेला देव्य श्री जिनवर्द्धन सूरि मूर्ति कारिता प्र. श्री जिनचन्द सूरिभिः।

7. श्री सम्भवनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है :– जो पढ़ने में आता है वह है– संवत् 1486 वर्षे –

---

1. **श्री जिनवर्द्धनसूरि** – खरतरगच्छीय आचार्य थे। इन्होंने कई ग्रंथों की रचना की व मेवाड़ में कई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराई।

8. श्री द्रोणाचार्य गुरू की श्वेत पाषाण की 18'' व परिकर सहित 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:– "संवत् 1486 वर्षे ज्येष्ठ वदि 5 सा. रामदेव भार्या मेलादेव्या श्री द्रोणाचार्य गुरू मूर्तिः कारिता प्र. श्री खरतरगच्छ श्री जिनचन्द्र सूरिभिः।

9. श्री सिद्धशलाका पट्ट श्वेत पाषाण का 35'' लम्बा व 17'' ऊँचा है जिसमें 5 जिनेश्वर भगवान की प्रतिमाएं है। प्रतिमाएं क्रमशः बाएं से 5'', 7'', 9'', 7'' व 5'' ऊँची है। इस पर लेख है:– सं. 1495 वर्ष ज्येष्ठ सुदि 14 बुधे श्री उकेश वंशे नवलखा श्री रामदेव भार्या मेला देव्या पु. सहणपालेन भार्या नारिंग दे स्व पुन्यार्थ सिद्ध शलाका प्रतिष्ठितं श्री जिन वर्द्धन पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि पट्टे जिन सागर सूरिभिः

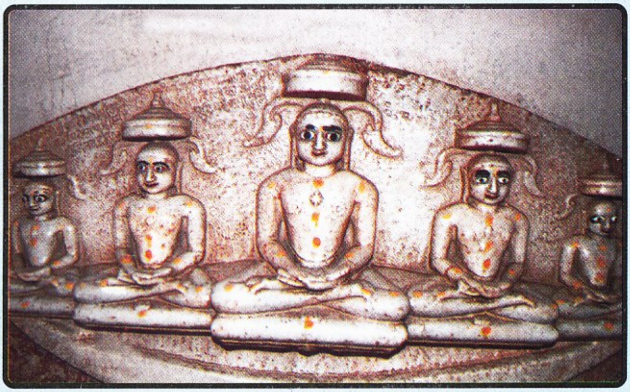

10. श्री जिनेश्वर भगवान की पीत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है इसके पीछे अस्पष्ट लेख व लांछण है।

मंदिरनुमा बड़ी देवरी में :–

11. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे अस्पष्ट लेख व लांछण है। सं. 1495 व आदिनाथ दिखने में आते है।

श्री द्रोणाचार्य– ये निवृत्ति कुल के आचार्य थे। इनकी ज्ञाता धर्म कथा की शोध में श्री अभयदेव सूरि ने सहायता की। इस ज्ञाता की टीका अभयदेव सूरि जी ने सम्वत् 1120 में बनाई।

सिद्ध शिला :– सिद्ध, लोक के अंत मे, सिद्ध शिला से ऊपर रहते है। सिद्ध शिला चौदह रज्जु लोक के मस्तक के ऊपर व्यवस्थित है। सिद्धों के निकट होने के कारण सिद्ध शिला कहते है। सिद्ध इनके ऊपर बैठे हुए नहीं है, सिद्ध तो इस शिला से ऊपर बिराजते है।

12. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बांए) श्वेत पाषाण की 11'' व परिकर सहित 21'' ऊँची प्रतिमा है।इस पर सं. **13**– पढ़ने में आता है, शेष अस्पष्ट है।

13. श्री जिनेश्वर (पद्मप्रभ) भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 13'' व परिकर सहित 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है। केवल सं. **1315** पढ़ने में आता है।

शेष जिनालय खाली है, कोई प्रतिमा नहीं है। **मंदिर के बाहर दाईं ओर खनन से** प्राप्त दो श्वेत पाषाण के परिकर के टुकडे सं. 1491 के है।

मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर की दीवार (बावन जिनालय) से एक दरवाजा है, बाहर खुला चौक व बरामदा है, जिसमें खनन से प्राप्त व मंदिर की शेष खण्डित प्रतिमाएं व अन्य वस्तुएं रखी है। जिसका विवरण इस प्रकार है:–

बरामदे में:–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की खडी खण्डित प्रतिमा है। इस पर लेख संव. 1493 वर्षे वैशाख वदि 5–श्री सर्वाणंदं सूरीणामुपदेशन

2. जिन पट्टिका (96 प्रतिमाओं का) श्वेत पाषाण का है जिसमें कुछ प्रतिमाएं खण्डित है। प्रत्येक प्रतिमा व ऊपर नाम उत्कीर्ण है। उन नामों के आधार पर वर्तमान, अतीत, अनागत चौबीस तीर्थंकर, 20 विरहमान 4 शाश्वत जिन देवों की प्रतिमा है। इस पर लेख है:–

सं. 1503 वर्षे आषा. शु. 7 प्राग्वाट सा. देपाल पुत्र सुहढसी भात्र सहडादे सुत पीछउलिआ सा. करण भा चतु. पुत्र सा. धांधा हेमा, धर्मा कर्मा हीरा हांसा काला सा. धर्माकेन भा. धर्मणियुत सहसा सालिग सहजा सोना साजणादि कुटुंबयुतेन 96 जिन पट्टिका कारिता 11 प्रतिष्ठिता श्री तपोगच्छाधिराज श्री सोमसुन्दर शिष्य जयचन्द्र सूरिभिः

3. जिन पट्टिका (72 प्रतिमाओं का) श्वेत पाषाण का है। प्रत्येक प्रतिमा के ऊपर नाम लिखा है। नाम के आधार पर वर्तमान, अतीत, अनागत चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएं है।

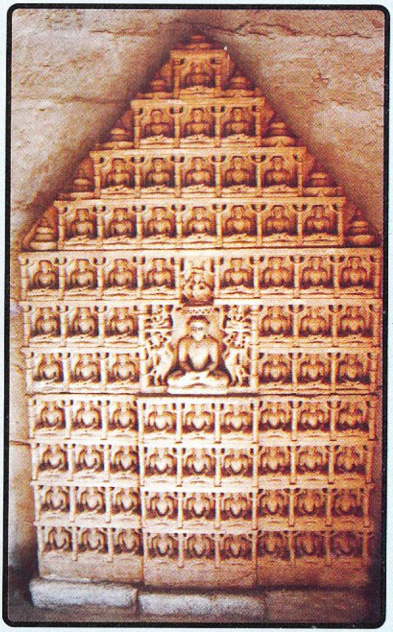

इस पर लेख है।

सं. 1494 वर्षे फागुण वदि 5 प्राग्वाट सा. देपाल पुत्र सुहढसी भार्या सुहडादे पुत्र पीधउलिया सा. करण भार्या चलू पुत्र सा. धांधा हेमा धर्मा–कर्मा हीरा काला भ्रातृ सा. हीसाकेन भार्या लाखू पुत्र आमदत्ता दि कुटुम्बयुतेन श्रीद्वासप्रति जिन पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्रीतपागच्छ–नायक सोमसुन्दर सूरिभि चौक में तीन खड़ी प्रतिमा (श्वेत पाषाण), आठ पदमासन प्रतिमा (श्वेत पाषाण), एक पदमासन (काली नीली मिश्रित पाषाण), 13 परिकर (प्रतिमा सहित) के टुकडे 1 स्तम्भ का टुकडा क्षेत्रपाल जी (भेरवजी) की प्रतिमा 17'' ऊंची प्रतिष्ठित मारीपना लगाये जाते है। इस मंदिर में भूतल (भोयरा) है जिसमें एक भी प्रतिमा नहीं है।

दीवार की बाहरी भाग की कला को देखकर पर्यटक मंत्र मुग्ध हो जाते है और कला की प्रशंसा के स्वतः शब्द फूट पडते है। यह भाग ग्राम की मुख्य सड़क के किनारे स्थित है इसलिए हर नागरिक आते–जाते देखा करते है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर

यह मंदिर घूंमटबंद है। मंदिर परिसर में एक अन्य श्री पार्श्वनाथ भगवान का बावन जिनालय स्थापित है। इसमें गुरू मूर्ति सं. 1381 की स्थापित है। जो स्थावीर कहलाती है। एक ही परिसर में दो मंदिर का निर्माण होना, ऐसी संभावना की जाती है कि दोनों मंदिर के निर्माण के बीच अधिक अंतराल नहीं है। दोनों मंदिर में 1300 के लगभग की प्रतिमाएं स्थापित है। इसमें भी तहखाना बना हुआ है। अतः इसको अधिक पुराना न माने तो भी 900 वर्ष पूर्व का तो मानना ही होगा।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है:–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 31'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है:–

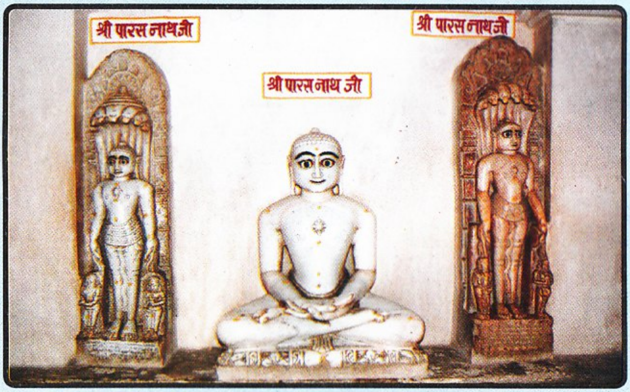

1492 आषाढ सूदि 13 आगे अस्पष्ट है।

प्रतिमा के ऊपर सामने की ओर:–

श्री पार्श्वनाथ बिंब सा. श्री ससुदयवच्छस्य

मूलनायक के बाईं ओर :–

2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' व सर्प के छत्र तक 29'' ऊँची खडी प्रतिमा है। इस पर यह लेख है:–

।।90।। सं. 1464 वर्षे आषा. शु. 13 दिनं गुजर ज्ञातीय भणसाली लाखण सुत मं जसतल सुत म. सादा भार्या सूमल दे सूत मं वरसिंह भ्रातृ म. जेसाबेन भार्या स्व श्रेयस प्रभु श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री सूरिभिः।

3. श्री जिनचन्द्रसूरि की श्वेत पाषाण की 19'' तथा परिकर तक 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:– संवत् 1491 वर्षे माह सुदि 5 बुधे नवलक्षगोत्रे सा. सहणपालेन स्वपुन्यार्थ श्री जिनवर्धनसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरीणां मूर्तिः प्र. श्री जिन सागर सूरिभिः।

4. श्री चतुर्विंशति पट्ट श्वेत पाषाण का 35'' ऊँचा है। इस पर भी 24 तीर्थंकरों के नाम उत्कीर्ण है। इस पर लेख है:– सं. 1503 वर्षे आषाढ़ शु 7 प्राग्वाट सा. आका भा. जालसदे चांपू पुत्र सा. देल्हा जेठा सोना खीमा है चतुर्विंशंति जिन बिंब पट्ट कारितः प्रतिष्ठितः श्री सोमसुन्दर सूरि शिष्ये श्री जयचन्द्र सूरिभिः।

5. श्री सन्तिकर पट्ट श्वेत पाषाण का 49'' ऊँचा है। इसमें 160 प्रतिमाएं है। इसके किनारे यह लेख है:– (जो पढ़ने में आता है।)

संवत 1486 वर्षे श्री रामदेव भार्या मेलादे पुत्र सहणपालेन पुत्री रवीमाई–शंतति कर पट्ट कारित देव सुंदर सूरि शिष्य सोमसुन्दर सूरि–

मूलनायक के दाईं ओर

6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 27'' व परिकर सहित 29'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है:–

सं. 1492 वि. वादे 5 गुरूवारे श्रीमाल ज्ञातीय सा. आशा पुत्र श्री पार्श्वनाथ बिंब देव पुन्या कारितः श्री खरतरगच्छे प्रतिष्ठित श्री जिनवर्धन सूरिभिः

7. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' व परिकर सहित 15'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

श्री जिनचन्द्रसूरि खरतरगच्छीय आचार्य थे। इनका जन्म सं. 1321 में गढ़ सिवाना में, सं. 1332 में दीक्षा, सं. 1341 में आचार्य पदवी प सं. 1371 में स्वर्गवास हुआ।

8. श्री जिन प्रबोधसूरि की श्वेत पाषाण की 17'' व नीचे तक 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख हैः–

"।।90।। सं. 1381 वैशाख वदि 5 श्री पत्तने श्री शान्तिनाथ विधी चैत्ये श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्यै श्री जिनकुशल सूरिभिः श्री जिन प्रबोधसूरि मूर्तिः प्रतिष्ठितः कारिता सा. कुमारपालरत्नै सा. महणसिहं सा. देपाल, सा. जगतसीह सा. मेहा सुश्रावकैः सपरिवारैः स्व श्रेयोर्थ"

9. श्री चतुर्विशन्ति पट्ट श्वेत पाषाण का 33'' ऊँचा है। इसके नीचे यह लेख है :–

"सं. 1493 वर्षे वि. सुदि 3 सस. देवदत्त भार्या देवलदे पुत्र सा. नागराज भार्या सो. रामदे भार्या रमादे पुत्रिया श्रीला श्री जिनवर्धन सूरि–

9. नन्दीश्वर द्वीप यह श्वेत पाषाण का 29'' गोलाकार है। इस पर लेख हैः–

"सं. 1485 वै.शु. 3 उकेश वंशे सा. वाछा भार्या राणा दे पुत्र सा. वीसल पत्या रामदेव भार्या मेलादे पुन्र्या सो खीमाइ नामन्या पुत्र सा. धीरा दीपा हासादी नामन्या श्री नन्दीश्वर पट्टकारिता प्रतिष्ठित श्री देवसुन्दर सूरि शिष्य सोमसुंदर सूरिभि तपा श्री खुमादि देव

इस मंदिर के नीचे भूतल में कमरेनुमा मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है।

1. श्री मुनिसुव्रत स्वामी की (पूर्वोमुखी) श्वेत पाषाण की 47'' ऊँची व 39'' चौडी प्रतिमा है। इसके नीचे अस्पष्ट लेख है। केवल सवत् 1494 पढने में आता है।

2. श्री शान्तिनाथ भगवान की (दक्षिणोमुखी) श्वेत पाषाण की 47'' ऊँची व 39'' चौडी प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है केवल सं. 1494 पढने में आता है।

3. श्री शान्तिनाथ भगवान की (पश्च्छिमोमुखी) श्वेत पाषाण की 49''ऊंची व 30''चौडी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। लांछण स्पष्ट है।

4. श्री सुमतिनाथ भगवान (पश्च्छिमोमुखी) श्वेत पाषाण की 33''ऊंची व 29'' चौडी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। लांछण पक्षी का दिखाई देता है।

श्री जिन प्रबोध सूरि खरतरगच्छीय आचार्य थे। इनका जन्म सं. 1285, दीक्षा, सं. 1291 पट्टोत्स सं. 1331 व स्वर्गवास सं. 1341 में हुआ।

5. श्री महावीर भगवान (उत्तरमुखी) श्वेत पाषाण की 45''ऊंची व 39'' चौडी प्रतिमा है। इस पर केवल सं. 1494 सोम सुन्दर पढने में आता है।

6. श्री जिनेश्वर भगवान की (पूर्वामुखी) श्वेत पाषाण की 33''ऊंची व 29'' चौड़ी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

7. श्री सम्भवनाथ भगवान (दक्षिणमुखी) की पीत पाषाण की 47''ऊंची व 41'' चौडी प्रतिमा है। इस पर लेख (जो पढने में आता है) है:–

श्री सम्भवनाथ बिंब–पुत्र नायब पुत्र–

8. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (पूर्वामुखी) पीत पाषाण की 45''ऊंची व 33'' चौडी प्रतिमा है। इस पर लेख संवत् 1494 का है।

9. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (पूर्वामुखी) पीत पाषाण की 47''ऊंची प्रतिमा है।

10. श्री सम्भवनाथ भगवान की (पूर्वामुखी) पीत पाषाण की 47''ऊंची व 37'' चौडी प्रतिमा है। इस पर लेख संवत् 1494 का सोमसुन्दरसूरि द्वारा प्रतिष्ठित है।

11. श्री कुन्थुनाथ भगवान की (उत्तरोमुखी) पीत पाषाण की 49''ऊंची व 33'' चौडी प्रतिमा है। इस पर लेख संवत् 1494 सा. परथा (?) सदाकेन (?) कुटुम्बयुतेन कुंथु बिंब

दोनों कमरे के बीच का मार्ग (प्रवेश के समय बाएं)

12. श्री आदिनाथ भगवान की पीत पाषाण की 29''ऊंची व 25'' चौडी प्रतिमा है। इस पर लांछण व लेख स्पष्ट नहीं है। लेकिन आदिनाथ शब्द पढ़ने में आता है। दोनों कमरे के बीच का मार्ग (प्रवेश के समय दाएं)

13. श्री पद्मप्रभ भगवान की पीत पाषाण की 29''ऊंची व 25'' चौडी प्रतिमा है। इस पर सं. 1488 का लेख है व पद्म प्रभ (?) पढ़ने में आता है।

❑❑❑

श्री महावीर भगवान का मंदिर

यह मंदिर देलवाड़ा ग्राम की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे पर स्थित है। यह मंदिर कब बना किसने बनाया इसकी कोई जानकारी नहीं है और न ही मंदिर में स्थापित प्रतिमा पर कोई लेख ही है जिसमें यह स्पष्ट हो सके कि मंदिर कितना पुराना है।

सड़क के निर्माण (जीर्णोद्धार) करते समय खनन से एक शिलालेख (जो श्री पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर के बाहर है) प्राप्त हुआ। यह शिलालेख संवत् 1836 का है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि मंदिर इसके पूर्व का रहा होगा।

इस मंदिर परिसर में दरवाजे के ऊपर एक उपाश्रय भी है उसमें साधु संत निवास करते थे। वर्तमान में यह पक्का है। किसी समय कच्चा था। अपनी साधना, दर्शन व भाव पूजा के लिये मंदिर जो कमरे के रूप में ही है। इस पर न शिखर है और न ही गुम्बज है। इसे "घर देरासर" कह सकते है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है:-

1. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा प्राचीन है, कोई लेख नहीं है। लांछण स्पष्ट है।

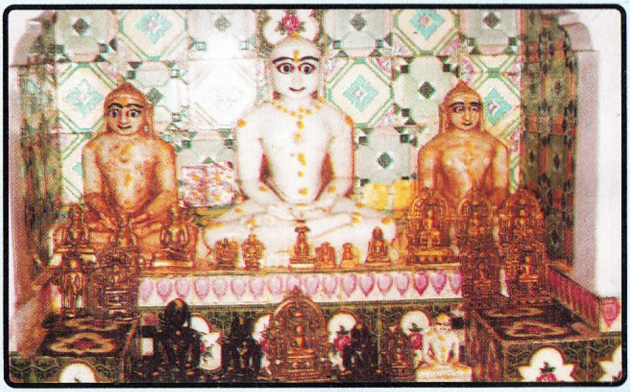

2. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

दोनों प्रतिमा मूलनायक के दाएं व बाएं स्थित है। इन पर कोई लेख व लांछण नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमाएं (धातुकी)

1–3. श्री जिनेश्वर भगवान की 5'', 5'', 4.5'' की ऊँची प्रतिमा है। इन पर कोई लेख व लांछण नहीं है।

4–5. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'', 2'', की ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।केवल सर्प का छत्र है।

6. श्री ऋषभदेव स्वामी की प्रतिमा 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर आगे श्री ऋषभदत्त पढ़ने में आता है। व पीछे सं. 1892 आषाढ़ सूदि 10 का लेख है।

7. श्री जिनेश्वर देवी की (कमल के फूल पर बिराजित) 3 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

8. श्री जिनेश्वर देवी की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

9. श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

10. श्री जिनेश्वर देवी की 2.5'' प्रतिमा ऊँची (संवत् 1203 की)

11. श्री शान्तिनाथ भगवान की 6.3'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1484 की है।

12. श्री सुमतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1511 की है।

13. श्री शीतलनाथ भगवान की 5.8'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1520 की है।

14. श्री शान्तिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1572 की है।

15. श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1204 की है।

16. श्री नेमीनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1515 की है।

17. श्री पार्श्वनाथा भगवान की 4'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1681 की है।

18. श्री सम्भवनाथ भगवान की 4'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा सं. 1329 की है।

19. श्री ताम्रपत्र पर मंत्र जिस पर श्री अजितनाथ भगवान की मुनि सुव्रत स्वामी व वासुपूज्य स्वामी, शान्तिनाथ भगवान की आकृति, नाम व मंत्र लिखे है।

20. सिद्धचक्र यंत्र 4.5''X 4.5'' का है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित पाषाण प्रतिमाएं

21. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इन पर कोई लेख नहीं है।

22–25. श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 7'', 5.5'', 4.7 व 3.:'' ऊँची प्रतिमा है। इन पर कोई लेख नहीं है।

26. श्री श्रावक (?) की श्याम पाषाण की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। **मूल जिन मंदिर के समानान्तर बाहरी सभामण्डप में एक आलिए में:–**

24. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' व दोनों ओर 17'' व 15'' ऊँची प्रतिमा है। इन पर कोई लेख व लांछण नहीं है। ये तीनों अप्रतिष्ठित प्रतिमाएं है। खनन से प्राप्त हुई है।

दक्षिणी दीवार के एक आलिएः–

25. श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। लांछण स्पष्ट है। यह कबूतर खाने के पास **खनन से प्राप्त हुई** है, यह अप्रतिष्ठित है।

इसी दीवार के अन्य आलिए में:–

26. गजानन जी की श्याम पाषाण की विभिन्न प्रकार की प्रतिमाएं स्थायी रूप से प्रतिष्ठित है। काई लेख नहीं है।

पूर्वी दीवार के एक आलिए में:–

27. श्री मणिभद्र जी की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

28. इसी दीवार में एक अन्य आलिए में श्री चक्रेश्वरी देवी की मारी पन्ना युक्त 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

29. श्री चरण पादुका श्वेत पाषाण की 13''X12'' के चौके पर स्थित है। इस पर किसी प्रकार का लेख नहीं है।

30. पश्चिमी दीवार के एक आलिए में अम्बिका देवी प्रतिमा नहीं का स्थान है। जिस पर त्रिशूल बना हुआ है और मारी–पन्ना लगे हुए है।

पश्चिमी दीवार पर एक पट्ट कांच का बना है जिसमें विभिन्न तीर्थ स्थल के चित्र है। खनन से प्राप्त एक परिकर का टुकड़ा (सर्प के छत्र का) श्याम पाषाण का रखा है।

इस मंदिर के पास चार दुकाने है, जिसमें से एक कार्यालय है, तीन किराये पर है।

साधु संत तपस्वी, तपस्वियों का आदर करना भारतीय सभ्यता, संस्कृति का सम्मान है। हर व्यक्ति आदर्श, का भाव रखता है। भावना में भक्ति व साधना में शक्ति आते ही वह भगवत् स्वरूप प्रगट होता है लेकिन भक्ति निष्काम होना चाहिए।

– आचार्य विजयराज जी

मेहनत वह कुंजी है जो किस्मत का फाटक खोल देती है। मनुष्य की सबसे बड़ी महानता विपत्तियों को खुशी–खुशी सह लेने में है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आना तो उसके कर्मा का फल है उससे सुखी, दुःखी होना अपनी कमजोरी का फल है।

– आचार्य भानुचन्द्र सूरि

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर

यह विशाल शिखरबंद मंदिर देलवाड़ा (देवकुलपाटक) के मुख्य बाजार में स्थित है। इसका भी ग्राम के साथ साथ निर्माण हुआ बताया जाता है। अर्थात् 6 वी शताब्दी का है। इसमें कुल 44 जिनालय है। किसी समय में इनमें प्रतिमाएं रही होगी। वि. सं. 1364 की घासा के त्रिपुरूष देवप्रसाद की प्रशस्ति अलाउद्दीन के गुजरात आक्रमण के समय देलवाड़ा व आसपास की स्मारक व मूर्तिया नष्ट की गई। यह रावल समरसिंह का था। (मेवाड़ की कला व स्थापत्य ले. राजशेखर व्यास के अनुसार) 10 वी. से 14. वीं शताब्दी तक महाराणा लाखा. कुम्भा के समय जैन मंदिरों का निर्माण, विकास प्रचुर मात्रा में हुआ।

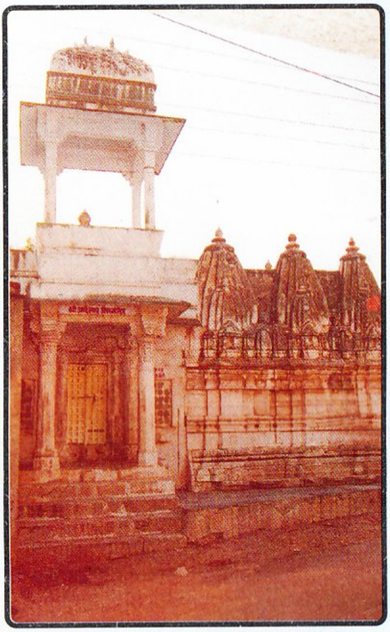

13–14 शताब्दी के जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं सं. 1486 तक चित्रकला शैली का उत्कृष्ट नमूना रहा है। (राजस्थान शोध पत्रिका का भाग 12 अंक 30 पृष्ठ सं. 117) मंदिर की जीर्ण शीर्ण अवस्था व प्रवेश द्वार को देखते हुए उक्त कथनों की पुष्टि होती है। वर्तमान में इस मंदिर में काफी कम प्रतिमाएं है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है।

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। लांछण स्पष्ट है कोई लेख नहीं है।

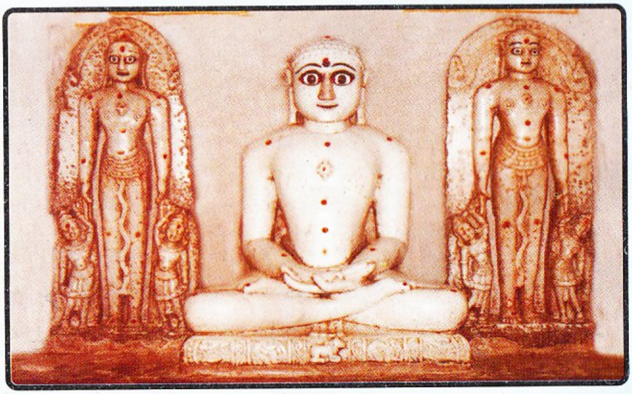

2–3. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के दोनों ओर दाए–बाए) श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची खडी प्रतिमा है। इन कोई लेख नहीं है।

जिन मंदिर से बाहर निकलते समय बाएं कारनिस पर –

श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची है। इस पर अस्पष्ट लेख है लेकिन आदिनाथ पढ़ने में आता है।

4. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची खड़ी प्रतिमा है। यह प्रतिमा उत्थापित है, खनन से प्राप्त हुई है। परिकर के टुकड़े की तरह है।

जिन मंदिर से बाहर निकलते समय दाएं (कारनिस पर)

5. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 20'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लांछण व लेख नहीं है।

6. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची खड़ी उत्थापित प्रतिमा है। खनन से प्राप्त हुई है। परिकर के टुकड़े की तरह है।

सभामण्डप से बाहर निकलते समय बाहरी सभामण्डप में कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है।

देवकुलिकाएं में (मंदिर में प्रवेश करने के बाई ओर)

मंदिरनुमा बडी देवरी में (पूर्वी दीवार पर)

7. श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लांछण स्पष्ट है। कोई लेख नहीं है।

8. श्री जिनेश्वर भगवान (मूलनायक के दोनो ओर) की श्वेत पाषाण की 9'' व परिकर तक 13'' ऊँची प्रतिमा है। इन पर कोई लेख नहीं है।

9. अष्टापद चित्र पट्ट श्वेत पाषाण का है जिसमें 109 प्रतिमाएं है। इस पर कोई लेख नहीं है।

पश्चिमी दीवार में मंदिरनुमा बड़ी देवरी में

10. श्री आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

11. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' व परिकर तक 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है।

सं. 1494 जेठ सुदि 14 बुधे – जिन सागर सुरि

12. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 11'' व परिकर तक 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

मंदिर के भूतल (भोयरा) में एक खडित प्रतिमा है। मंदिर से बाहर पीछे की ओर उत्तर पूर्व कोने में एक बड़ी चट्टान के ऊपर यक्ष की प्रतिमा है जिस पर संवत् 1571 का लेख है। कौनसे यक्ष की है ज्ञात नहीं होता

मंदिर का बाह्य दृश्य मंदिर की विशालता व प्राचीनता दर्शाता है।

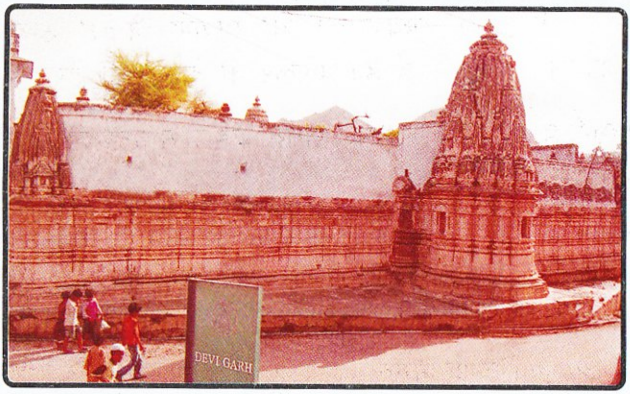

इसकी दीवार को देखने से इसकी प्राचीनता भव्यता झलकती है। दीवार के ऊपरी भाग का जीर्णोद्वार किया हुआ है।

इस मंदिर परिसर में ,खुदाई करने पर कई ऐतिहासिक तथ्य सामने आने की सम्भावना की जा सकती है जीर्णोद्धार कार्य में कई प्राचीन लेख नष्ट हो गये है।

विशेष :– मंदिर के साथ 3.25 बीघा जमीन है। यह भूमि पर पूर्व में अजैन लोग कब्जा करने लगे तो देलवाड़ा का सम्पूर्ण जैन समाज के सदस्य जिसमें प्रमुख रूप से स्थानकवासी थे, सभी ने एकता का प्ररिचय दिया और सभी ने श्री मांगीलाल जी सुराणा को सहयोग देकर जमीन को सुरक्षित करा कब्जा दिलाया।

मंदिर के साथ मूर्तिपूजक समाज की एक धर्मशाला भी विद्यमान है। यह धर्मशाला पूर्व में छोटी थी, श्री मांगीलाल जी सुराणा के सहयोग से पास की जमीन क्रय कर पुरानी धर्मशाला को गिराकर नवीन रूप से तैयार की। इस धर्मशाला के पुनः निर्माण के लिये श्री लालचंद जी पिण्डवाड़ा वाला हाल श्रीपाल नगर बालकेश्वर

मुम्बई ने व्यक्तिगत स्तर पर व वहाँ के श्री संघ द्वारा आर्थिक सहयोग दिया व शेष श्री सुराणा द्वारा सहयोग देकर धर्मशाला पूर्ण कराई। इस धर्मषाला के लिए भूमि का कुछ भाग श्री माणकचन्द जी खेतपालिया ने निःशुल्क उपलब्ध कराई।

देलवाड़ा ग्राम में केवल एक मकान श्री अम्बालाल जी मांगीलाल जी सुराणा का ही था और उन्हीं के द्वारा मंदिरों की देखरेख की जाती थी। वे उदयपुर स्थानान्तरित हो जाने से स्थानकवासी समाज के सहमति से मंदिरों की देखरेख व व्यवस्था की, अन्य अधिकार लिखित में महासभा को हस्तान्तरित किया। श्री सुराणा के उदयपुर स्थानान्तरित हो जाने से मंदिर की देखरेख, पूजा आदि में कमी आने से मंदिरों का विकास में कमी आई है। इसके साथ–साथ ग्राम का विकास भी अवरूद्ध हुआ है। सुराणा परिवार उदयपुर स्थानान्तरित हो जाने पर भी देलवाड़ा में मंदिर सम्बन्धी कार्य हो, साधु संतों का आगमन होने पर इनके वैया वच्च का प्रबन्ध व छःरी पालित संघ आने पर उनकी समुचित व्यवस्था करने में सहयोग करते है।

अभी ऐसे ही विचार राजस्थान राज्य के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द जी कटारिया ने भी दिये कि मंदिरों की पूजा आदि नहीं होने से ग्राम का विकास अवरूद्ध हो गया है।

इन सभी मंदिरों की वार्षिक ध्वजा आषाढ़ शुक्ला 9 को चढ़ाई जाती है। वर्तमान में इन मंदिरों की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर महासभा उदयपुर द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र – 0294–2420462 **(उदयपुर)**
02953–289096 **(देलवाड़ा)**

मंदिर एवं मंदिर में स्थापित प्रतिमा हमारी संस्कृति के प्रमुख स्रोत, प्रेरणा के केन्द्र व आधार स्तम्भ है। यह ऊर्जा के स्रोत, प्रेरणा के केन्द्र व जाग्रति के धाम है।

आचार्य नित्यानन्दसूरि

श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर के अतिरिक्त ग्राम में दिगम्बर जैन मंदिर एव अन्य प्राचीन दर्शनीय स्थान है।

1. **श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर** – दिगम्बर समाज द्वारा संचालित है। यह मंदिर गुम्बजाकार है, तथा इसमें उत्कीर्ण लेख संवत् 1168 का है। इस पर यह लेख हैः ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः नेमिनाथायनमः खेणा खुण दि 10 प्रतिधारा संवत् 1168।

2. **श्री सत्यनारायण जी का मंदिर** :– ग्राम के मुख्य बाजार की सड़क के किनारे स्थित है। यह भी करीब 400 वर्ष पुराना मन्दिर है। बस स्टेण्ड से आने वाले मार्ग का सम्वत् 1896 में निर्माण हुआ। धार्मिक अनुष्ठान प्रायः होते रहते है। इसी परिवार के साथ ही बावड़ी व धर्मशाला बनी हुई है।

3. **श्री लक्ष्मी नारायण जी मंदिर** :– यह मन्दिर देवीगढ़ के तलहटी में स्थित है। यह मेवाड़ व वागड़ प्रदेश में तेली समाज का प्रमुख मंदिर है। मदिर में श्री लक्ष्मीनारायण स्वामी व उनके भक्त पद्मा जी की प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर की स्थापना संवत् 1633 व पद्मा जी की प्रतिमा सम्वत् 2049 में स्थापित की। कहा जाता है कि भक्त पद्मा जी की तपस्या से प्रसन्न होकर श्री लक्ष्मीनारायण भगवान की प्रतिमा तेज आंधी के समय भेंट द्वारिका से उड़कर यहां आ गई। भेंट द्वारिका में मूर्ति का रिक्त स्थान आज भी देखा जा सकता है।

इस मंदिर में सुन्दर काँच की जड़ाई व चित्रकारी की हुई है।

4. **श्री शीतला माता का मंदिर** :– यह मंदिर राष्ट्रीय मार्ग नम्बर –8 के बस स्टेण्ड से नाथद्वारा मार्ग पर पहाड़ी पर स्थित है। यह काफी प्राचीन मंदिर रहा है। देवकुल पाटक नगर के मध्य भाग में स्थित था। चैत्र मास की सप्तमी को यहां मेला लगाया जाता है। भक्तों में विशेषकर महिलाओं द्वारा पूजा की जाती है।

इन्द्रकुण्ड :– यह लक्ष्मीनारायण जी के मंदिर के पास स्थित है। यह कुण्ड अधिक पुराना नहीं है, इसका निर्माण आधुनिक रूप से संगमरमर के पत्थर से बना हुआ है।

श्री रागड़िया जी बाबजी :– यह व्यंतर देव का स्थान है। यहां सप्ताह में एक बार चौकी होती है। स्थानीय व बाहर से लोग अपनी समस्या को लेकर प्रश्न रखते है, उत्तर मिलता है। कहा जाता है कि वे रात्री में घोड़े पर बैठ कर घूमते है जिसके घुंघरू व घोड़े के टाप (पाँव) की आवाज सुनाई देती है।

भूतल के नीचे (भोयरें) में स्थापित प्रतिमाओं की चित्रावली

इन सभी प्रतिमाओं का वर्णन पुस्तक के पृष्ठ संख्या 42–43 पर उल्लेखित है।

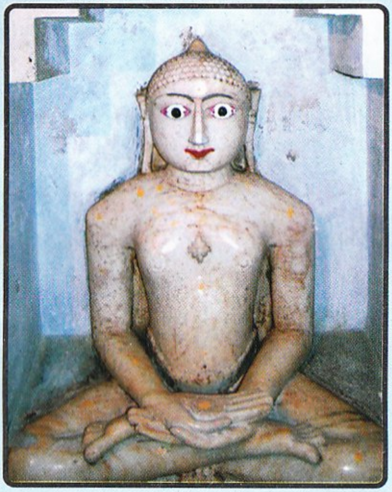

1

2

3

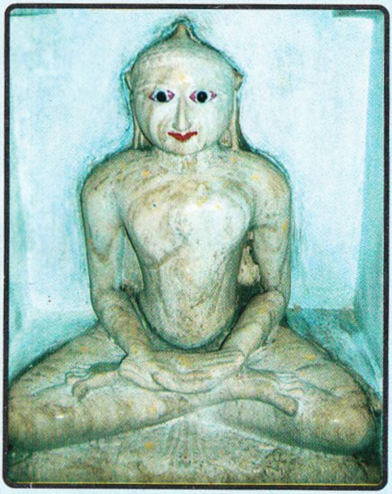

4

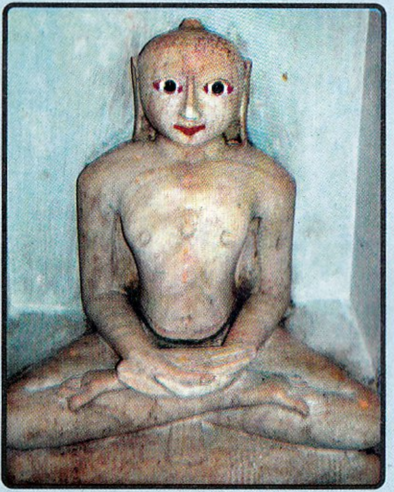

5

6

7

8

9

10

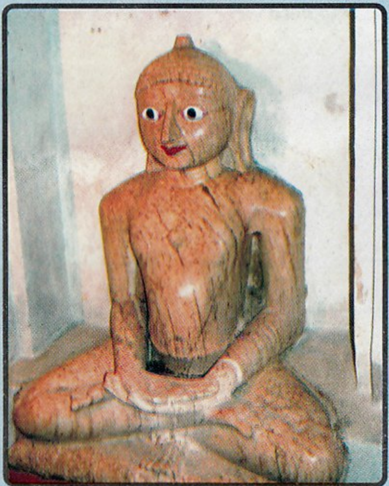

11

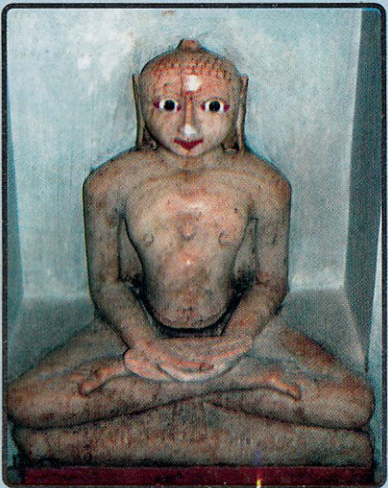

12

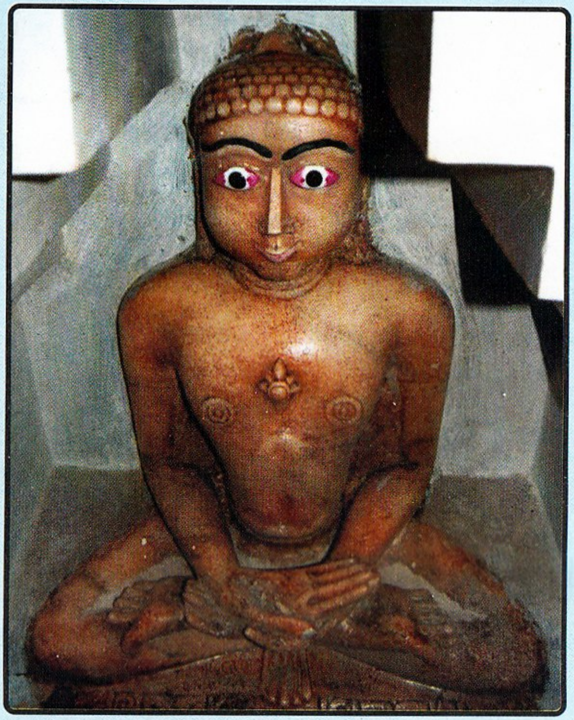

13

उक्त प्रतिमाएं वर्षा के पानी में डूब जाने से चित्रों में फिकापन है।

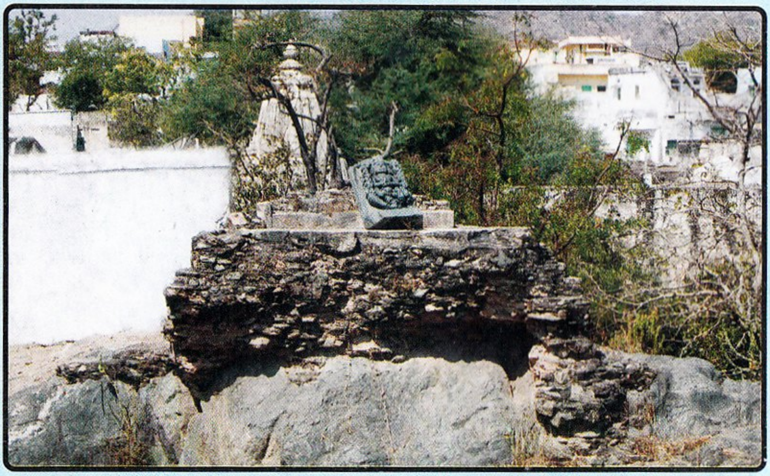

यक्ष मुर्ति एवं देलवाड़ा ग्राम का बाहरी दृश्य